

निरुध्यते SARVADARCANAS. 177, 12. 164, 4. fgg. BHAG. 6, 20. — 4) ver-  
hüllen, verdecken: निरुद्धं गगनं सर्वं व्यथं मेघैः समलतः MBH. 13, 2069.  
HARIV. 8782. R. 5, 8, 24. SUÇR. 1, 23, 2. VARĀH. BRH. S. 24, 15. 28, 6. 47,  
26. RĀGA-TAR. 1, 369. BHĀG. P. 2, 9, 37. BHATT. 7, 70. — 5) erfüllen, an-  
füllen: बाष्पनिरुद्धकाष्ठी R. GORR. 2, 123, 24. BHĀG. P. 6, 14, 50. धूपग-  
न्धनिरुद्ध (स्थान) MBH. 14, 1924. खगपदलतैः पर्षेनिरुद्धं नीलकामलैः (व-  
नम्) R. GORR. 2, 98, 5. वाजिशालाः — निरुद्धा मक्षिपैरिव RĀGA-TAR. 4,  
165. BHĀG. P. 3, 17, 17. — 6) unterdrücken so v. a. verschwinden machen  
CIC. 4, 55. युगे युगे भवत्येते सर्वे दत्तादयो नृपाः । पुनश्चैव निरुध्यते und  
verschwinden wieder HARIV. 112 = VP. bei MUIR, ST. I, 27, N. 45. अहो  
रात्रिनिरुद्धास्ते कालेन हृदि ये कृताः BHĀG. P. 9, 3, 32. — 7) निरुद्ध so  
v. a. अपरुद्ध verstoßen PAÑĀV. BR. 9, 1, 9. KĀTH. 13, 5. — 8) निरुध्य  
MBH. 3, 962 fehlerhaft für निरुप्य (wie schon WESTERGAARD vermuthet  
hatte), निरुध्यतु 13, 4530 fehlerhaft für विरुध्यतु; die Bomb. Ausg. hat  
an beiden Stellen die richtige Lesart. निरुध्यत्पदम् RĀGA-TAR. 2, 165  
wird wohl auch unrichtig sein. — Vgl. निरुद्ध fg., निरोद्धव्य fgg. —  
caus. 1) einschliessen: वायुं निरोधयेत् Verz. d. Oxf. H. 234, a, 31. 33. —  
2) verschliessen lassen: द्वारान् (!) RĀGA-TAR. 5, 428.

— उपनि einsperren, einschliessen, eintreiben: पशून् CAT. Br. 3, 7, 3, 3.

— संनि 1) zurückhalten, festhalten: ०रुद्ध MBH. 3, 1613. 6, 1964 (सं  
निरुद्धेषु ed. Bomb.). 7, 933. 4433. स्वकर्मभिर्मानवं संनिरुद्धम् 13, 2956  
= 3, 12728, wo fälschlich स्वकर्मभिर्दानवसंनिरुद्धे gelesen wird. — 2)  
hemmen, unterdrücken, aufheben: श्रुतिश्च संनिरुध्यते पुरा तवेह MBH.  
12, 12082. कामक्रोधस्य लोभस्य (मोक्षस्य die ältere Ausg.) संनिरुद्धस्य  
मेधया HARIV. 11696. यद्यपि न संनिरुध्यते दुःखम् WILSON, SĀMKBHAK. S.  
10. प्राणायामैः संनिरुद्धषड्वर्गः BHĀG. P. 4, 23, 8. प्राणायामो संनिरुध्यात् 7,  
13, 32. — 3) einschliessen, gefangen halten ÇVETĀÇV. UP. 4, 9. HARIV.  
10230. BHĀG. P. 9, 15, 22. Verz. d. Oxf. H. 236, a, 2. अग्निद्वारं संनिरुद्धा-  
मि so v. a. zusammengeschürt R. 7, 24, 10. 36, 5. (vor der Aussenwelt)  
verschliessen: संनिरुध्येन्द्रियग्रामम् Spr. 5161. पञ्चेन्द्रियस्य ग्रामस्य नव-  
द्वारस्य — संनिरुद्धस्य HARIV. 11696. — 4) erfüllen, anfüllen, voll ma-  
chen: देहेन तस्य मन्त्रस्य — संनिरुद्धो मन्त्ररङ्गः स शैलेनेव लक्ष्यते HA-  
RIV. 4733. रोमभिः संनिरुद्धाङ्गम् MBH. 12, 87. — Vgl. संनिरुद्धगुद, ०रो-  
द्धव्य, ०रोध.

— परि 1) einschliessen: इयमेवैनमर्चिभ्यां परिरोधमानयति TBr. 3, 9,  
13, 3. — 2) Jmd zurückhalten Spr. 971. — 3) anfüllen: बाष्पपरि-  
रुद्धान् R. GORR. 2, 16, 33. 7, 24, 26. — Vgl. परिरोध.

— प्र 1) Jmd zurückhalten: माता मे प्ररुपाद्धि (संरुपाद्धि SĪV. 5, 82)  
माम् MBH. 3, 16830. — 2) hemmen, sperren: अतीर्थेन न्वा अयमध्वर्युरा-  
कुतोः प्ररौत्सीत् ÇAT. Br. 11, 4, 2, 14. प्राणान् 12, 4, 2, 6. PAÑĀV. BR. 13, 4, 11.

— संप्र pass. ausgeschlossen werden, einer Sache verlustig gehen: ०रु-  
ध्यते im Gegens. zu युज्यते HARIV. 11778. समवरुध्यते die neuere Ausg.

— प्रति 1) abhalten, zurückhalten, hemmend entgegenreten, sich wi-  
dersetzen: तं यः प्रतिरुधेद्यशः स प्रतिरुधेतस्मान् प्रत्यरौत्सि AIT. Br.  
6, 34. TS. 6, 4, 2, 2. प्रतिरुध्य गुरुम् M. 11, 88. MBH. 5, 7144. अन्योऽन्यं  
प्रत्यरुधताम् BHĀG. P. 10, 44, 4. प्रतिरुद्धत् R. 4, 60, 3. देवं पुरुषकारेण  
प्रतिरोद्धुम् R. GORR. 2, 20, 9. अप्रतिरुद्धेन प्रज्ञानेन ungehemmt BHĀG. P.  
2, 9, 24. अप्रतिरुद्धचक्र 4, 16, 27. यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादेकेनाङ्गेन यज्वनः

unterbrochen, gestört M. 11, 11. — 2) einschliessen, einsperren: नगरे प्र-  
तिरुद्धः MBH. 5, 1214. धातरं पूर्वसं हि यः । अश्रमभिः प्रत्यरौत्सीत् — विले  
R. 4, 53, 3. absperren: प्रतिरुध्य रणाञ्जिरम् MBH. 5, 7320. die Sinne u.  
s. w. (gegen die Aussenwelt): प्रतिरुध्येन्द्रियाणि 823. प्रतिरुद्धेन्द्रिय-  
प्राणमनोबुद्धि BHĀG. P. 1, 18, 26. — 3) verhüllen, verdecken: ते दिशो  
विदिशः सर्वे प्रतिरुध्य प्रकारिणाः MBH. 3, 12114. HARIV. 13611. — Vgl.  
प्रतिरोद्ध्वा fgg.

— वि 1) med. Widerstand finden: पुरस्ताद्यवानो सवित्रा विरुध्यते ।  
सवित्रैव विरुध्य ब्रह्मणा यवानादधते durch S. finden sie Widerstand  
vor dem Getraide, durch das Br. nehmen sie es in Besitz TBr. 1, 8, 4, 1.

— 2) विरुध्यते und ०ति a) streiten, in Feindschaft leben, Feindschaft  
beginnen, kämpfen mit (instr., instr. mit सकृ, gen., loc., acc. mit प्रति):  
नानुरुध्ये विरुध्ये वा न द्वेषि न च कामये MBH. 12, 9349. यथाकस्माद्दि-  
रुध्यते 6275. Spr. 3276. अन्योऽन्यं विरुध्यते (विक्रुध्यते ed. Bomb.) MBH.  
1, 1357. व्यरुध्यत परस्परम् VĀJU-P. bei MUIR, ST. I, 31, N. 56. ब्राह्म-  
णैश्च विरुध्यते MBH. 5, 1063. HARIV. 7313. Spr. 2836. 4288. 4922. BHĀG.  
P. 10, 1, 68. MĀRK. P. 27, 10. बन्धुभिश्च विरुध्यतु (निरु० ed. Calc.) MBH.  
13, 4530. 4572. 4577. R. 7, 61, 8. चाषस्य काकेन विरुध्यतः VARĀH. BRH.  
S. 88, 24. मृत्युर्धुवस्ते ऽद्य मया विरुध्य R. 3, 44, 31. तया सकृ विरुध्यते  
MBH. 2, 227. तत्कथं सकृ पित्राहं विरुध्येयम् R. GORR. 2, 23, 17. fg. त-  
त्तमं न विरोद्धुं ते सकृ तेन 4, 14, 19. न च ते ऽहं विरुध्यामि कस्मान्मो  
कृतवानस्मि 16, 19. यस्मिन्विरुध्य दशकंधर आर्तिमार्क्तं BHĀG. P. 2, 7,  
23. इन्द्रेणा — अस्मान्प्रति (so trennen wir) विरुध्यता R. 5, 41, 8. bekäm-  
pfen: ब्रह्म (acc.) तत्र (nom.) यत्र विरुध्यतीह MBH. 12, 2782. विरुद्ध im  
Streite liegend, in Feindschaft lebend, feindselig gestimmt, verfeindet  
R. 2, 1, 13. 4, 53, 9. KĀM. NĪTIS. 13, 55. Spr. 123 (zugleich eingeschlossen).  
253. VARĀH. BRH. S. 93, 46. 97, 12. KĀTHĀS. 39, 229. 43, 306. निरुद्धाहं वि-  
रुद्धानां रतिता नमता पुनः 46, 158. 74, 101. RĀGA-TAR. 5, 452. HIT. ed.  
JOHNS. 2126. परस्परणाविरुद्धाः R. 1, 7, 8 (11 GORR.). राषवेण विरुद्धस्य  
तव 3, 41, 31. 4, 87, 18. 5, 48, 13. Spr. 1679. महलेन विरुद्धाय dem, der  
sich meiner Macht widersetzt, R. 2, 23, 25. तपश्चाराणां मृडसौम्यशीलिनां  
सदा विरुद्धं ऽहं रावणम् 5, 89, 33. अविरुद्धस्ततस्तस्य तपोन समपद्यत  
MBH. 12, 4271. KĀTHĀS. 60, 142. परस्परविरुद्धाः RAĞH. 10, 81. राजवि-  
रुद्धानाम् Spr. 4871. RĀGA-TAR. 4, 165. von Planeten Verz. d. Oxf. H.  
86, a, 1 v. u. feindselig so v. a. unerwünscht, widerwärtig, gehässig u. s.  
w.: लक्षण R. 5, 27, 32. चेष्टित KĀTHĀS. 74, 161. ०शंसन = गालि H. 272.  
विरुद्धमकरोन्मपि KĀTHĀS. 20, 129. 5, 4. 44, 123. मा स्याद्वाज्ञकुले किंचि-  
द्विरुद्धम् 49, 132. अ० 71, 210. विरुद्धमिदं त्वयानुष्ठितं यन्मर्क्यं प्रदाय क-  
न्यान्यस्मै प्रदत्तेति PAÑĀV. 130, 1. 39, 25. यदि वा प्रति विरुद्धमाचरामि  
213, 20. अन्यथा विरुद्धं ते फलिष्यति (अन्यथा ते विरुद्धं फलं भविष्यति  
v. l.) HIT. 58, 18. विरुद्धधी Feindseliges im Sinne habend, schadenfroh  
RĀGA-TAR. 1, 303. अस्मद्विरुद्धं कुरुते KĀTHĀS. 43, 167. परविरुद्धेषु नेतस्-  
कृते मन्त्राशयाः 17, 149. कर्म लोकविरुद्धम् R. 3, 33, 4. — b) in Wider-  
spruch stehen mit Etwas, einen Widerspruch bilden: एतद्विरुध्यते  
MBH. 13, 5595. ÇĀMİK. zu BRH. ĀR. UP. S. 39. 94. NĪLAK. 157. MUIR, ST.  
4, 221. न च केन च धर्मेण (so die ed. Bomb., NĪLAK. erwähnt aber auch  
die Lesart der ed. Calc.) विरुध्यते प्रजा इमाः MBH. 8, 2074 (vgl. R. 4, 17,  
33). सेयं भगवतो माया यन्नयेन विरुध्यते BHĀG. P. 3, 7, 9. पत्स्ववाचो वि-